प्रेस–विज्ञप्ति

प्रथम सब्जी विज्ञान कांग्रेस का आयोजन

कृषि विश्वविद्यालय, जोधपुर के प्रांगण में प्रथम राष्ट्रीय स्तरीय सब्जी विज्ञान कांग्रेस का आयोजन किया जा रहा है। जिसमें सब्जी विज्ञान से संबंधित देश के विभिन्न भागों से 10 कुलपति एवं लगभग 300 वैज्ञानिक भाग ले रहे हैं। कार्यक्रम का आयोजन भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली, भारतीय सब्जी अनुसंधान संस्थान, वाराणसी, भारतीय सब्जी विज्ञान समिति, समन्वित कृषि विकास समिति एवं कृषि विश्वविद्यालय के संयुक्त तत्वावधान में 1 – 3 फरवरी को आयोजित किया जा रहा है।

कार्यक्रम के उदघाटन समारोह में मुख्य अतिथि डॉ. कीर्ति सिंह, पूर्व चैयरमैन, कृषि वैज्ञानिक चयन मंडल, नई दिल्ली, चैयरमैन डॉ. डी.पी. रे, पूर्व कुलपति, उड़िसा कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, भुवनेश्वर, प्रो0 नजीर अहमद, माननीय कुलपति एस.के.यू.ए.एस.टी.के, शालीमार, जम्मू कश्मीर, प्रो0 जी. कल्लू, पूर्व कुलपति जे.एन.के.वी.वी, जबलपूर एवं पूर्व उप महानिदेशक, बागवानी, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली, डॉ. प्रेम नाथ, पूर्व सहायक महानिदेशक जनरल, विश्व खाद्य संगठन एवं चैयरमैन, प्रेमनाथ कृषि विज्ञान फाउंडेशन, नई दिल्ली एवं डॉ. बलराज सिंह, माननीय कुलपति, कृषि विश्वविद्यालय, जोधपुर, डॉ. के.वी. पीटर, पूर्व कुलपति, केरल कृषि विश्वविद्यालय, त्रिचूर, डॉ. बिजेन्द्र सिंह, अध्यक्ष, भारतीय सब्जी अनुसंधान संस्थान, वाराणसी, डॉ. एम. जी. सोम, पूर्व कुलपति, बी.सी.के.वी., कल्याणी, पश्चिम बंगाल के अतिरिक्त सब्जी विज्ञान के जाने माने वैज्ञानिक डॉ. कालिया, डॉ. तोमर, डॉ. नारायण चावड़ा भी उपस्थित थे। उद्घाटन भाषण के दौरान डॉ. बलराज सिंह ने कहा कि कृषि विश्वविद्यालय, जोधपुर राजस्थान के पश्चिमी जिले जोधपुर, पाली, जालौर, सिरोही ,नागौर में कृषि अनुसंधान शिक्षा एवं प्रसार का कार्य कर रहा है। उन्होंने बताया की पिछले कुछ वर्षों में समाज में सब्जियों के उत्पादन एवं उपभोग में परिवर्तन आया है तथा अनाज उपभोग घटा है एवं सब्जियों व फलों का उपभोग लगातार बढ़ रहा है। वर्तमान में भारत में लगभग 101 लाख हैक्टेयर क्षेत्रफल में सब्जियों का उत्पादन किया जा रहा है। जिससे 181 मिलियन मैट्रिक टन उत्पाद प्राप्त हो रहा है जो चीन के बाद दूसरे स्थान पर है। डॉ. सिंह ने अपने उद्घाटन भाषण में यह भी बताया कि अधिक तापमान, कम वर्षा, बालू मृदा, अधिक वाष्पन, उच्च विकिरण दर, अत्यधिक कम कार्बनिक पदार्थ एवं प्रतिकूल परिस्थितियों के कारण पश्चिमी राजस्थान में सब्जी उत्पादन में मुख्य चुनौतियाँ है परंतु वर्तमान अनुसंधान एवं उन्नत तकनिकियों के समावेश से इनका सफल उत्पादन करने से अधिक लाभ प्राप्त होता है। उन्होनें यह भी कहा कि अब समय आ गया है कि हमारे किसान भाई फसल को पानी देवें, भूमि को नहीं जो सूक्ष्म सिंचाई पद्धति से संभव है। डॉ. सिंह ने बताया कि सब्जियों का प्रसंस्करण एवं मूल्य संवर्धन द्वारा अधिक लाभ हो सकता है तथा उन्होंने इस क्षेत्र में उत्पादित होने वाली गाजर एवं प्याज की अधिक जल मांग होने के कारण इस प्रकार की सब्जियों की जगह शुष्क क्षेत्र में उत्पादित होने वाली काचरी, गंवार फली, तरबूज, खरबूज, कैर, सांगरी आदि के उत्पादन पर विशेष ध्यान देने को कहा। कार्यक्रम के दौरान प्रो0 नजीर अहमद ने बताया कि स्वतंत्रता के बाद देश एवं फल और सब्जियों के उत्पादन में महत्वपूर्ण वृद्धि हुई है। जिसके परिणामस्वरूप सब्जियों की पहुँच प्रत्येक भारतीय की थाली में संभव हो पाई है। उन्होंने बताया कि वर्तमान में सब्जी उत्पादन के क्षेत्र में किये गये अनुसंधानों के परिणामस्वरूप एवं संरक्षित खेती के माध्यम से सभी सब्जियों को वर्ष भर उगाया जाना संभव हो पाया है। वर्तमान में कुल बागवानी का उत्पादन लगभग 315 मिलियन टन हो चुका है। जो खाद्यान्नों के कुल उत्पादन 285 मिलियन टन से लगभग 10 प्रतिशत ज्यादा है। डॉ जी. कल्लू ने

अपने उद्घोषण में बताया सब्जियों के द्वारा पोषण प्रबंधन एवं स्वास्थ्य लाभ संभव है। उन्होंने कहा कि सब्जियाँ विटामिन, प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट, खनिज लवण एवं जैव सक्रिय तत्वों का भरपूर स्त्रोत है जो मानव को स्वस्थ रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। उन्होंने सब्जियों के उत्पादन में आने वाली कठिनाईयों पर विस्तृत चर्चा करते हुए युवा वैज्ञानिकों को इस प्रकार की चुनौतियों को स्वीकार करते हुए गहन अनुसंधान करने की बात कही। डॉ. कल्लू ने बताया कि पश्चिमी राजस्थान की जलवायवीय परिस्थितियाँ विपरीत होने के बावजूद भी परम्परागत एवं आधुनिक तकनीकियों के उचिततम समावेश द्वारा सब्जियों का उत्पादन बढ़ाया जा सकता है। सब्जी उत्पादन में भविष्य की सम्भावनाओं को देखते हुए कृषि विश्वविद्यालय, जोधुपर को जैविक कृषि, जल संरक्षण, संरक्षित खेती एवं उन्नत बीजों के प्रयोग द्वारा इस क्षेत्र में सब्जी उत्पादन को बढ़ावा देना चाहिए। डॉ. कीर्ति सिंह ने अपने उद्घाटन भाषण में वैज्ञानिकों का संबोधन करते हुए बताया कि भारत में सब्जी उत्पादन के क्षेत्र में भरपूर विकास हुआ है। जिसके परिणामस्वरूप 15 मिलियन टन से आज हम 181 मिलियन टन सब्जियों का उत्पादन करने में सक्षम रहे हैं परन्तु आज भी हम प्रति व्यक्ति इनकी आवश्यक उपलब्धता की पूर्ति करने में सक्षम नहीं हो पाये हैं। जिसका मुख्य कारण सब्जियों का प्रति इकाई उत्पादन अन्य विकसित देशों की अपेक्षा काफी कम है एवं भारत में संरक्षित सब्जी उत्पादन का प्रचार–प्रसार भी अधिक नहीं हो पाया है। डॉ. कीर्ति सिंह ने वैज्ञानिकों से कहा कि कम समय में अधिक उत्पादन देने वाली कीट एवं रोगों के प्रतिरोधी किस्मों का विकास करना होगा तथा कम क्षेत्रफल में अधिक उत्पादन प्राप्त करने के लिए संरक्षित कृषि पद्धति एवं समन्वित पोषण प्रबंधन अपनाना होगा। डॉ. प्रेमनाथ ने युवा सब्जी वैज्ञानिकों को संबोधित करते हुए कहा कि वर्तमान में वातावरणीय समस्याएँ लगातार बढ़ती जा रही है। भूमि कल्लर हो रही है तथा सिंचाई जल की उपलब्धता लगातार घटती जा रही है इन समस्याओं के निराकरण हेतु वैज्ञानिक समाज को समय रहते मंथन करना चाहिए तथा उन्होंने कहा कि अब सब्जियों हेतु अनुसंधान उपभोक्ता की आवश्यकता के अनुसार करना होगा। जिससे विपणन एवं भंडारण की समस्या का निराकरण किया जा सके। डॉ. प्रेमनाथ ने यह भी कहा कि अब समय आ गया है जिसमें हम उत्पादन की मात्रा के बजाय कुल पोषक तत्वों की उपलब्धता के आधार पर सब्जियों का उत्पादन करें तथा सब्जियों का पोषण मान बढ़ाने के उपाय करने चाहिए। वर्तमान में हमारी खाद्य नीति उत्पादन आधार पर है जिसे पोषण आधार पर बनाना आवश्यक है। डॉ. डी.पी. रे ने कार्यक्रम के दौरान सब्जियों के उत्पादन पर किये जाने वाले अनुसंधानों एवं भविष्य की चुनौतियों पर चर्चा करते हुए बताया कि आने वाले समय में जन सामान्य को संतुलित आहार प्रदान करने में सब्जियों की अहम भूमिका है एवं वर्तमान समय में कुल सब्जी उत्पादन का 20 से 25 प्रतिशत भाग उपभोग से पहले खराब हो जाता है जिसको समय पर तुड़ाई, सुरक्षित यातायात, ग्रेड़िग, पैकिंग, प्रसंस्करण एवं मूल्य संवर्धन द्वारा रोका जा सकता है। उन्होंने उत्पादन की अपेक्षा तुड़ाई उपरांत होने वाले नुकसान को रोकने के लिए युवा वैज्ञानिकों का आह्वान किया।

इनको किया गया सम्मानित :–

कार्यक्रम के दौरान सब्जी वैज्ञानिक डॉ. एन. रॉय, मुख्य वैज्ञानिक, आई.आई.वी.आर., वाराणसी को डॉ. कीर्ति सिंह लाइफ टाइम अचिवमेंट अवॉर्ड 2017, डॉ. ए.टी. सदाशिवा, मुख्य वैज्ञानिक एवं विभागाध्यक्ष, सब्जी विज्ञान, आई.आई.एच.आर., बैंगलूर को डॉ. विश्वजीत मैमोरियल अवॉर्ड, डॉ. प्रेम ठाकुर, पी.ए.यू., लुधियाना को डॉ. द्वारिका नाथ मैमोरियल अवॉर्ड 2017 एवं डॉ. ए.एस. दत्त, गगनदीप कौर, एम.के. सिद्धू एवं सुखिंदर कौर पी.ए.यू., लुधियाना को डॉ. हरभजन सिंह मैमोरियल अवॉर्ड से सम्मानित किया गया। इसके अतिरिक्त सब्जी विज्ञान विषय पर किये गए अनुसंधान एवं सहयोग के लिए प्रख्यात वैज्ञानिक डॉ. कीर्ति सिंह, पूर्व चैयरमैन कृषि वैज्ञानिक चयन मंडल एवं पूर्व

कुलपति, डॉ. प्रेमनाथ पूर्व सहायक निदेशक जनरल,एफ.ए.ओ., बैंकोक, डॉ. जी. कल्लू, पूर्व डिप्टि डॉयरेक्टर जनरल (उद्यान विज्ञान) आई.सी.ए.आर., पूर्व कुलपति जे.एन.के.वी.वी., जबलपूर, डॉ. डी.पी. रे, पूर्व कुलपति, उड़िसा कृषि विश्वविद्यालय, भुवनेश्वर एवं अध्यक्ष भारतीय कृषि विज्ञान समिति, डॉ. एम.जी. सोम पूर्व कुलपति, बी.सी.के.वी., कल्याणी एवं डॉ. के.वी. पीटर, पूर्व कुलपति केरला कृषि विश्वविद्यालय, त्रिचूर को प्रशस्ति–पत्र, शॉल एवं प्रतीक चिन्ह प्रदान कर सम्मानित किया गया।

<u>इन प्रकाशनों का हुआ विमोचन :–</u>

कार्यक्रम के दौरान अनुसंशित किए जाने वाले अनुसंधानों की समावेश पुस्तिका, सोवेनियर, बीजीय मसालों के उत्पादन एवं कम उपयोग किये जाने वाले फलों के उत्पादन, प्रबंधन एवं विपणन पर ज्ञान–पत्र एवं फल एवं सब्जियों के पादप रसायन विषय की पुस्तक का विमोचन किया गया। कांग्रेस के दौरान प्रख्यात सब्जी वैज्ञानिकों द्वारा कृषि विश्वविद्यालय, जोधपुर की वेबसाइट का पुनः स्थापन भी किया गया।

.....